और... एक शेर

इतनी सी बात थी जो समंदर को खल गई
काग़ज़ की नाव कैसे भंवर से निकल गई

-हसीब सोज़

लोकमत समाचार

तमसो मा ज्योतिर्गमय

मुश्किलें वे औजार हैं जिनसे ईश्वर हमें बेहतर कामों के लिए तैयार करता है. ■ एच. डब्ल्यू. बीचर

संपादकीय

हर साल क्यों रुलाता है प्याज?

प्याज ने देशवासियों को रुलाना शुरू कर दिया है. पिछले कुछ दिनों में इसकी कीमतें आसमान को छूने लगी हैं. देश के हर हिस्से में इस समय यह ऊंची कीमत पर बिक रहा है. थोक में 50 रुपए प्रति किलो के आसपास तो खुदरा भाव 70 से 90 रुपए प्रति किलो तक है. सूखे को प्याज के दाम बढ़ने की वजह बताया जा रहा है. महाराष्ट्र समेत जिन राज्यों में प्याज की पैदावार ज्यादा होती है वहां से सप्लाई कम होने की बात कही जा रही है. उधर, प्याज कीमत का शतक जड़ने को अग्रसर है, इधर इसके और महंगा होने की आशंका के चलते लोगों में इसे खरीदकर जमा करने की बेताबी भी बढ़ती जा रही है. सरकार ने आनन-फानन में इसके आयात का फैसला भी ले लिया है. मौसम की मार का असर अन्य सब्जियों-अनाज पर भी पड़ता है लेकिन प्याज के दामों में बेतहाशा वृद्धि और फिर अचानक गिरावट का कारण केवल मौसम ही हो, ऐसा नहीं लगता. भारतीय रसोई में प्याज का खास स्थान है. यही जानते-बूझते हुए ऐसा लगता है कि बिचौलिए इसका फायदा उठाते हैं. यदि ऐसा न होता तो हर साल प्याज ही क्यों न केवल जनता को, बल्कि सरकार को भी रुलाने लगता है! पहले संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार के सामने महंगे प्याज का सवाल खड़ा हुआ और अब राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार महंगे होते प्याज से परेशान है. सरकार बढ़ती कीमतों पर रोक लगाने के लिए आयात का रास्ता अख्तियार कर रही है, जबकि जरूरत बिचौलियों और जमाखोरों पर सख्ती बरतने की है. विडंबना ही है कि कुछ समय पहले तक हम 30-35 रुपए प्रति किलो के हिसाब से प्याज का निर्यात कर रहे थे और अब नौबत दुगुने भाव पर आयात करने की आ गई है. जानकार कहते हैं कि हमें प्याज को साल भर सुरक्षित रखने की तकनीक अपनानी होगी. तब बिचौलियों से तो निजात मिलेगी ही, जमाखोरों पर आसानी से लगाम कसी जा सकेगी. पता नहीं क्यों, कोई भी सरकार इस समस्या का स्थायी समाधान खोजने की दिशा में काम नहीं कर रही. सरकारी उपायों के अलावा हमें भी अपने स्तर पर जमाखोरी से बाज आना होगा. आमतौर पर देखा गया है कि जैसे ही प्याज के दामों में वृद्धि की खबरें सुनने-पढ़ने को मिलती हैं, लोग बदहवास होकर उसकी जमाखोरी करने में जुट जाते हैं. जिसे दो किलो की जरूरत होती है वह चार किलो खरीद लेता है. इसी देश में कई परिवार ऐसे भी हैं जिनकी रसोई में प्याज का इस्तेमाल कतई नहीं होता, लेकिन उनके घरों में भी स्वादिष्ट भोजन पकता है. तो क्या हम कुछ समय के लिए अपना फूड पैटर्न नहीं बदल सकते? ऐसे समय जब प्याज की कीमत आसमानी हो रही है, संयम बरतते हुए कुछ समय के लिए प्याज खरीदना बंद कर दिया जाए तो कोई संदेह नहीं कि उसके दाम जमीन पर आ जाएंगे. ■■

भूख के 'जीन्स'

अम्मा स्वदेश आए अपने प्रवासी बेटे के सामने लगी खाने की मेज पर रखे तरह-तरह के पकवानों के ढेर से एक-एक कर पकवान बेटे की थाली में परोसती जा रही थीं - ''बेटा, ये लो गाजर का हलवा, जो तुम्हें बहुत पसंद है. और ये मालपुए, मेवे और मावे से भरपूर, ये गाढ़ी मलाईदार खीर और साथ में ये हींग की मोयनदार कचौरी...'' पर, जैसे ही उन्हें दरवाजे पर बैठा काम वाली बाई का पांच साल का बेटा अंकित याद आया, उनकी आवाज थोड़ी देर के लिए ठिठकी और आरोह, अवरोह में बदल गया- ''ओह! मुझे याद ही नहीं रहा कि अंकितवा दरवाजे पर ही बैठा है. अगर गलती से भी इन पकवानों की सुगंध उसे लग गई तो वह किसी न किसी बहाने घर के भीतर दौड़ा चला आएगा. पता नहीं, कैसे सूंघ लेता है, वह पकवानों की सुगंध. दिन-भर खाने के लिए दम किए रहता है. अरे, तुम लोग भी तो कभी बच्चे थे, कहां कभी खाने के लिए ऐसे दम किया करते थे. उल्टा, मुझे ही तुम लोगों के पीछे दौड़ना पड़ता था खिलाने के लिए.

लघुकथा

वंदना सहाय

बेटा, जो अनुवांशिकता पर शोध कर रहा था अपने हलक में अटक-से गए निवाले को निगलने की कोशिश करता हुआ बोला- ''अम्मा, शिशु जब अपनी मां के गर्भ में पल रहा होता है और गर्भकाल के नौ महीनों में शिशु की मां ज्यादातर समय भूखी रहती है तो शिशु को भी गर्भ में भूखा ही रहना पड़ता है. काम करने वाली गरीब औरतों के केस में तो मुझे लगता है कि यही भूखी मां की भूख के 'जीन्स' उसके शिशु में भी ट्रांसमिट हो जाते हैं, जो उसके पैदा होने के बाद उसमें खाने की ललक को सदा बनाए रहते हैं. मैं वैज्ञानिक तौर पर गलत भी हो सकता हूं. पर काश! मैं अपनी थीसिस में इसे साबित कर पाता.''■■

राष्ट्रपति पद से रिटायरमेंट की चिंता

आलोक मेहता
वरिष्ठ पत्रकार

आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा और उनकी पत्नी मिशेल ओबामा ने पद से रिटायरमेंट के बाद अपनी सुविधाओं और गतिविधियों को जारी रखने के लिए एक अरब डॉलर का चंदा इकट्ठा करने का लक्ष्य बना रखा है. ओबामा अगले साल 2016 में रिटायर होने वाले हैं. पिछले दिनों वाशिंगटन-न्यूयॉर्क में इस मजेदार तथ्यात्मक खबर की बहुत चर्चा रही कि ओबामा दंपति ने देश के 13 अरबपतियों को रात्रि-भोज पर चंदा इकट्ठा करने के लिए आमंत्रित किया और उन्हें तड़के 2 बजे तक व्हाइट हाउस में बैठाए रखा. 'बेचारे' अरबपति घंटों तक ओबामा की उपलब्धियों, पृष्ठभूमि, राजनीतिक चुनौतियों, नस्लीय पूर्वाग्रहों, समाज तथा देश-दुनिया की सेवा के लिए अपने इरादों की बातें सुनते रहे. दुनिया के शीर्षस्थ नेता की 'डिनर बैठक' में बीच से उठकर जाने की हिम्मत-हिमाकत भी कोई नहीं कर सकता था. एक बड़ी कंपनी के मालिक ने संकेत में विनम्रता से इतना अवश्य कहा कि ''जब उचित लगे, हमें बाहर कर दें.'' ओबामा ने कंधे पर हाथ रखकर जवाब दिया - ''जब सही वक्त हो जाएगा, मैं आपको बाहर जाने को कह दूंगा.'' इस तीखी साफगोई के बाद अमीरजादों को कुछ घंटे और बैठना पड़ा. सबने ओबामा की रिटायर्ड जिंदगी के लिए चंदे के वायदे किए. व्हाइट हाउस के अधिकारियों का दावा है कि ओबामा परिवार के लिए 2012 में पुनः राष्ट्रपति चुनाव जीतने के बाद से 2016 के बाद का भी इंतजाम शुरू कर दिया था. उस चुनाव में विजय के लिए भी करीब एक अरब डॉलर खर्च हुआ था. लगभग तीन वर्षों में ओबामा साहब लगभग पांच लाख डॉलर का चंदा जुटा चुके हैं.

कहीं आप यह न समझ लें कि अमेरिकी राष्ट्रपति को सरकारी खजाने से पेंशन नहीं मिलती. अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन के नाम से बने एक्ट के तहत रिटायरमेंट के बाद हर राष्ट्रपति को एक करोड़ 16 लाख डॉलर की पेंशन, ऑफिस और थोड़ा स्टाफ रखने की व्यवस्था है. लेकिन जॉर्ज बुश अथवा बिल क्लिंटन जैसे रंगीन और शान शौकत वाले राष्ट्रपति को एक-दो करोड़ से कैसे संतुष्टि हो सकती है. उन्होंने अपने सत्ताकाल में चंदा जुटाया - क्लिंटन फाउंडेशन स्थापित किया. नतीजा यह है कि सरकारी खजाने से मिलने वाली पेंशन और सुविधाओं के अलावा उनके फैमिली फाउंडेशन में दो अरब डॉलर जमा हैं. इसके अलावा देश-दुनिया में भाषण देकर क्लिंटन साहब ने पिछले साल करीब 72 करोड़ 70 लाख डॉलर कमाए. इसलिए मिस्टर ओबामा भी धूमधाम से विदाई के बाद शिकागो में अपनी लाइब्रेरी, न्यूयॉर्क में ऑफिस, यात्राओं और अन्य सुविधाओं के लिए चंदा जमा कर रहे हैं. वह चंदा जुटाते समय अपनी बेटी को आगे पढ़ाने की इच्छा जताने में भी संकोच नहीं करते. इसे कहते हैं - अमीर देश के सर्वशक्तिमान राष्ट्रपति की साफगोई अथवा 'दयनीय दशा'. जरा सोचिए, भारत के किसी बड़े नेता के बेटे-बेटी को पढ़ने-पढ़ाने, नौकरी या छोटा-मोटा काम धंधा दिलवाने के लिए किसी परिचित से सामान्य आग्रह करना साधारण बात मानी जाए या गंभीर भ्रष्टाचार का अपराधी? इसमें कोई शक नहीं कि सरकारी खजाने से अनुचित लाभ दिलाना अथवा किसी ठेके में कमीशन या रिश्वत तो कानूनी अपराध ही माना जाएगा. दूसरी तरफ ओबामा के साथ विदेश मंत्री रही हिलेरी क्लिंटन आगामी चुनाव में राष्ट्रपति पद की दावेदार बन रही हैं. लेकिन अभी से उनके विरूद्ध आरोप लग रहे हैं कि पद पर रहते हुए क्लिंटन के भाषण करवाने के नाम पर उन्होंने चीन-रूस जैसे देशों से अच्छी खासी रकम इकट्ठा की और उन देशों के साथ व्यापारिक सौदों में सरकार से लाभ भी पहुंचाया.

> अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने पद से रिटायरमेंट के बाद एक अरब डॉलर का चंदा इकट्ठा करने का लक्ष्य बना रखा है.

भारत जैसे देशों में राष्ट्रपति प्रधानमंत्री की यात्राओं के अलावा समझौतों पर भी प्रश्न उठते रहते हैं. लेकिन ब्रिटेन, अमेरिका, जापान जैसे देशों में उठने वाले गंभीर आरोपों पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता. अमेरिका के शीर्ष नेताओं का स्वागत-सत्कार और प्रशंसा 'अतिथि देवता' की तरह किया जाता है और भारतीय शीर्ष नेताओं की आलोचना भर्त्सना के रूप में होने लगती है.

हां, पेंशन के संबंध में भारत के राष्ट्रपति के लिए रखे गए एक प्रावधान का उल्लेख भी जरूरी है. भारत के राष्ट्रपति को पद रहते हुए केवल 1 लाख 50 हजार रुपए मासिक वेतन मिलता है और रिटायर होने के बाद मात्र 75 हजार रुपया मासिक वेतन, एक सामान्य बंगला, सचिव तथा पांच व्यक्तियों का स्टाफ एवं 60 हजार रुपए का खर्च सरकारी खजाने से दिया जाता है. वह एक व्यक्ति के साथ विमान अथवा रेल से यात्रा करने की सुविधा पाते हैं. इसके विपरीत अमेरिका के किसी पूर्व राष्ट्रपति की यात्रा में होने वाले ताम-झाम को देखें तो जमीन-आसमान का अंतर है.

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के पूर्व राष्ट्रपति और पूर्व प्रधानमंत्री तथा उनके परिवार की स्थिति सचमुच दयनीय महसूस होती है. उनके लिए अमेरिका की तरह चंदा इकट्ठा करने की परंपरा भले ही न डाली जाए लेकिन उनके अनुभवों का लाभ उठाने तथा प्रतिष्ठा सुरक्षित रखने के मुद्दे पर चर्चा अवश्य होनी चाहिए. ■■

आम आदमी को शेयर बाजार से जोड़ें

डॉ. जयंतीलाल भंडारी
प्रख्यात अर्थशास्त्री

निश्चित रूप से शेयर बाजार संबंधी आर्थिक चुनौतियों के बीच कई ऐसी आर्थिक अनुकूलताएं भी हैं, जो देश की विकास डगर को आगे बढ़ाते हुए दिखाई दे रही हैं. हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) द्वारा प्रकाशित वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2015-16 में भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया की सबसे तेज विकास दर वाली अर्थव्यवस्था दिखाई दे रही है. इस समय कच्चे तेल के मूल्यों में तेजी से आई भारी कमी देश की अर्थव्यवस्था के लिए नई आकस्मिक बचत के रूप में दिखाई दे रही है. इससे शेयर बाजार में किसी नई भारी गिरावट से भी बचा जा सकेगा.

यदि हम देश के आयात बिल को देखें तो पाते हैं कि आयात बिल में पिछले कई वर्षों से लगातार पहला क्रम कच्चे तेल का है. अब बदले हुए वैश्विक आर्थिक घटनाक्रम के कारण भारत को तेल पर व्यय में कमी से भारी बचत होनी शुरू हो गई है. गौरतलब है कि अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर ईरान के साथ वैश्विक शक्तियों के परमाणु समझौता होने की वजह से तेल की आपूर्ति बढ़ने लगी है. चीन सहित कई देशों में आर्थिक सुस्ती के मद्देनजर कच्चे तेल की कम खपत के कारण कच्चे तेल के दाम तेजी से नीचे आ गए हैं.

सरकार द्वारा शेयर बाजार से संबंधित कुछ प्रश्नों पर विचार जरूरी है. क्या उद्योग और कारोबार के लिए शेयर बाजार से पर्याप्त धन मिल रहा है? आम आदमी अभी भी शेयर बाजार से क्यों दूरी बनाए हुए है? जो भारत क्रय शक्ति के आधार पर दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है, जिसकी अर्थव्यवस्था एक खरब डॉलर की हो, क्या वहां कुल जनसंख्या के सिर्फ ढाई फीसदी निवेशकों का होना ही संतोषप्रद है? वस्तुतः दुनिया के विकसित देशों और कई उभरती अर्थव्यवस्थाओं में पूंजी मुहैया कराने की दृष्टि से शेयर बाजार की जो महत्वपूर्ण भूमिका है, वैसी भूमिका भारतीय शेयर बाजार की नहीं है. भारतीय कारोबारियों के पास नए उद्यम शुरू करने या चालू उद्यम को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन ही नहीं है. नए फंड तक भी उनकी पहुंच नहीं है क्योंकि बैंक अब फंसे हुए कर्ज के मामलों को देखते हुए नए ऋण देने में काफी सतर्कता बरतने लगे हैं. ऐसे में इस संकट से निकलने का तरीका है नए सिरे से पूंजीकरण करना. इस काम के लिए मजबूत शेयर बाजार की आवश्यकता होगी. शेयर बाजारों में मजबूती आर्थिक सुधार की प्रक्रिया से संबंधित है. जरूरी होगा कि सरकार के द्वारा निवेश का माहौल सुधारने के लिए साफ संकेत दिए जाएं. देश को कारोबार के लिहाज से अधिक अनुकूल बनाया जाए. सरकार के द्वारा कर नीति, प्रशासनिक सुधार और सब्सिडी की प्राथमिकता को नए सिरे से तय करने के मामले में तीव्रता से कदम उठाए जाएं. तेजी से नीतिगत बदलाव करके निवेशकों को यह भरोसा दिलाया जाए कि सरकार विकास के लिए कदम उठा रही है.

> निवेशकों की तादाद कम रहने का एक मतलब यह भी है कि सरकार आम आदमी को शेयर बाजार की उपयोगिता नहीं समझा सकी है.

सरकार के द्वारा आम आदमी और निम्न मध्यम वर्ग को शेयर बाजार से जोड़ने के लिए रणनीतिक प्रयास करने होंगे. यह सही है कि भारत की आबादी का एक बड़ा हिस्सा गरीबी में निर्वाह कर रहा है लेकिन भारतीय नागरिकों की कुल बचत जीडीपी की 26 फीसदी है, जो विकासशील देशों में मिसाल के रूप में गिनी जा रही है. इसीलिए कुल जनसंख्या के ढाई प्रतिशत जैसी कम तादाद में निवेशकों का होना चिंताजनक है. हमारे यहां निवेशकों की तादाद कम होने की वजह यह है कि अब भी लोग शेयर बाजारों को जुआ ही मानते हैं. निवेशकों की तादाद कम रहने का एक मतलब यह भी है कि सरकार आम आदमी को शेयर बाजार की उपयोगिता नहीं समझा सकी है. सेबी का गठन 1991 में शेयर बाजार को नियंत्रित करने के साथ ही निवेशकों को शेयर बाजार की ओर प्रेरित करने के लिए भी हुआ था. लेकिन सेबी बाजार नियंत्रण और लोगों को निवेशक के रूप में जागरूक बनाने में अभी बहुत पीछे है. ■■

समझौते में इतनी गोपनीयता क्यों?

कृपाशंकर चौबे
वरिष्ठ संपादक

केंद्र सरकार और नगा विद्रोही संगठन नेशनल सोशलिस्ट कौंसिल ऑफ नगालिम (एनएससीएन, इसाक-मुइवा गुट) के बीच इस महीने के आरंभ में जो समझौता हुआ, उसे दशकों पुरानी समस्या का अंतिम समाधान मानना जल्दबाजी होगी. और तो और, समझौते के खिलाफ खड़े हुए पूर्वोत्तर के दूसरे राज्यों से निपटना भी बहुत आसान नहीं होगा. सही है कि समझौता और समाधान एक चीज नहीं है. लेकिन यह भी सही है कि सुलह-समझौता समाधान की तरफ बढ़ने वाला एक कदम होता है. नगा समझौते के ब्यौरे को अभी तक गोपनीय रखा गया है. नगालैंड को अधिक स्वायत्तता देने, दूसरे राज्यों के नगा बहुल इलाकों में सामाजिक और आर्थिक विकास सुनिश्चित करने, प्राकृतिक संसाधनों पर अधिक अधिकार देने, भारतीय सेना की नगा रेजीमेंट में अतिरिक्त बटालियन सृजित करने आदि के प्रावधान तो निश्चित ही इस समझौते में होंगे किंतु बाकी प्रावधानों के बारे में अभी तक कुछ नहीं बताया गया है. तीन हफ्ते गुजर चुके हैं. समझौते के ब्यौरे को सार्वजनिक करने के लिए केंद्र सरकार और कितना समय लेती है और किस अवसर का चयन करती है और समझौते के खिलाफ खड़े हुए पूर्वोत्तर के दूसरे राज्यों से वह कैसे निपटती है, इसी पर इसकी सफलता बहुत हद तक निर्भर करेगी.

> नगा समझौते के ब्यौरे को अभी तक गोपनीय रखा गया है, जिसकी कि कोई जरूरत नहीं है.

नगा समझौते की प्रक्रिया भी बहुत लंबी चली. यह समस्या सात दशक पुरानी है. मणिपुर में 1945 में पीपुल्स लिबरेशन आर्मी का गठन हो गया तो नगा नेता जापू अंगामी फिजो स्वाधीन नगालैंड की मांग पर अड़ गए. 1947 में जब देश स्वाधीन हो रहा था तो अंग्रेजों के उकसावे में आकर फिजो ने विद्रोह कर दिया. फिजो के दिमाग में अंग्रेज यह बिठाने में कामयाब हो गए थे कि नगा बाकी भारत से अलग हैं. नगा बहुल क्षेत्रों को अलग देश करार देते हुए फिजो ने नगा नेशनल कौंसिल नामक संगठन बनाया. संगठन की मदद हासिल करने के लिए फिजो पहले पाकिस्तान गए फिर लंदन. लंदन में ही उन्होंने आखिरी सांस ली. जाते समय उन्होंने नगाओं से कहा था, ''जब तक न आऊं, संगठित होकर रहना.'' नगाओं ने उनकी बात गांठ बांध ली. वे संगठित रहे और बागी बने रहे.

एनएससीएन (इसाक-मुइवा गुट) के साथ मोदी सरकार का समझौता होने के बावजूद याद रखना होगा कि कई नगा विद्रोही नेताओं के प्रशिक्षण शिविर अब भी म्यांमार में हैं. याद रखना होगा कि सात साल पहले 2008 में अजेथो चोपी की अगुवाई में सेमा नगा समुदाय के सभी कैडर एनएससीएन (इसाक-मुइवा गुट) से अलग हो गए थे और अलग गुट की स्थापना कर ली थी.■■

नजर के पार

सैन्यशक्ति और कूटनीति का मिलन जरूरी

डॉ. जे. ए. खान
विभागाध्यक्ष, रक्षा व सामरिक अध्ययन
भोंसला मिलिट्री कॉलेज नासिक-5

कूटनीति के मोर्चे पर भारत एक बार फिर विफल और पाकिस्तान सफल रहा है. भारत द्वारा विश्वास बहाली के किसी भी उपाय का पाकिस्तान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है. पाकिस्तान ने जानबूझकर कश्मीर मुद्दे पर हुर्रियत के बहाने सीमापार आतंकवाद पर बातचीत को टाल दिया है. हुर्रियत गैरसरकारी पक्ष है जिसे पाकिस्तान ने कश्मीर मुद्दे पर राजनयिक लाभ के लिए पैदा किया है. ऐसा क्यों है? क्योंकि यदि मुस्लिम बहुल कश्मीर भारत में बना रहता है तो धर्म के आधार पर राष्ट्रीयता के मुद्दे पर पाकिस्तान के सामने सवाल खड़ा हो जाएगा और उसका द्विराष्ट्र का सिद्धांत अर्थहीन हो जाएगा. इस प्रकार, पाकिस्तान के लिए कश्मीर धार्मिक पहचान का मुद्दा और भारत के लिए धर्मनिरपेक्षता की पहचान का मुद्दा बन गया है. इसीलिए, पाकिस्तान अभी भी कहता है कि कश्मीर के बिना वह अधूरा है और यही कारण है कि वह भारत-पाक संबंधों को मुक्त रूप से चलने की अनुमति नहीं देने के औचित्य के रूप में कश्मीर का उपयोग करता है.

भारत के एक चौथाई आकार वाला पाकिस्तान हमें हमेशा मुंह चिढ़ाता है, लेकिन हम उसे रोक नहीं पाते. 13 दिसंबर 2001 को संसद पर हुए आतंकी हमले के मद्देनजर भारत ने पश्चिमी सीमा पर अपनी सेना जुटाई थी और 14 जनवरी 2002 तथा 10 जून 2002 को युद्ध के काफी करीब था. लेकिन पाकिस्तान पर हमला नहीं किया, क्योंकि उसे भय था कि सैन्य तानाशाही वाला पाकिस्तान परमाणु हथियारों का इस्तेमाल कर सकता है.

भारत में राजनीतिक-सैन्य बौद्धिक परिदृश्य मूल रूप से उजाड़ है. शांतिपूर्ण बयानबाजी पर जोर देने की पुरातन नीति पाकिस्तान से निपटने की भारत की सामरिक संस्कृति पर बहस को रोके हुए है. पाकिस्तान द्वारा संघर्ष विराम के लगातार उल्लंघन को देखते हुए प्रभावी रणनीति तैयार करने के लिए सैन्यशक्ति तथा कूटनीति के बीच एकीकरण की आवश्यकता बढ़ती जा रही है.

कूटनीति और शासन-कला गंभीर मुद्दे हैं तथा हमारे राजनेताओं के पास सुसंगत दृष्टिकोण की कमी है. हमें इस आदर्शवादी दृष्टिकोण से छुटकारा पाने की जरूरत है कि जब कुत्ता हमें काटे तो हमें भी उसे नहीं काटना चाहिए. कुत्ते के इस क्रूर कृत्य के लिए हमें उसे मार डालना चाहिए ताकि उसकी पीढ़ियां हमें काटने से पहले दो बार सोचें. पाकिस्तान से निपटने के लिए अब भारत को एक और इंदिरा गांधी तथा मानेकशॉ की जरूरत है. किंतु हमारी राजनीतिक-सैन्य प्रणाली की दुखद बात यह है कि हमारे पास मानेकशॉ जैसे तो अनेक हैं, पर इंदिरा गांधी जैसा कोई नहीं, जो पाकिस्तान से निपटने के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश दे सके. क्या हमारी सेना 1971 को दोहरा सकती है; हमारी सामरिक संस्कृति पाकिस्तान में एक और भौगोलिक परिवर्तन ला सकती है? बिल्कुल, वह ऐसा कर सकती है, किंतु सैन्य लक्ष्य को बनाए रखने के लिए स्पष्ट राजनीतिक लक्ष्य की जरूरत है. एक बार दोनों के बीच संतुलन स्थापित हो जाए तो हम पाकिस्तान के उद्देश्यों को विफल कर सकते हैं, अन्यथा पाकिस्तान के साथ निपटने के किसी राजनीतिक निर्णय के अभाव में हमारे सैनिकों को बलिदान देते रहना होगा और पीड़ा भुगतनी होगी. क्या हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री पाकिस्तान से सबसे उपयुक्त तरीके से निपटने का निर्णय ले सकते हैं? ■■

तोल बोल

केंद्र और दिल्ली सरकार का रिश्ता सास-बहू जैसा है और दोनों को मिलकर काम करना होगा.

■ सुमित्रा महाजन, लोकसभा अध्यक्ष

भाजपा नेताओं को नीलामी प्रक्रिया पर ऐतराज क्यों है जब नरेंद्र मोदी सरकार सब कुछ नीलाम कर रही है और यहां तक कि श्री मोदी को नीलामी प्रधानमंत्री के तौर पर जाना जाने लगा है.

■ जयराम रमेश, वरिष्ठ कांग्रेस नेता

gñWinHš gnXHš :
nd. Odñabnb XS
M`a_Z, E[SQñ{a`b ~šS :
{dO¯ XS
E[SQa-BZ-Mr\š :
arOB XS
gnXH :
{dHšng {_I ★
★ nr. Aza. ~r. HbZZ Hš
AZgna gnU gnXHš` Xo{`Ed
Hš {bE {Oâ_Xza.

© लोकमत समाचार _ àHb{eV g^r gı_Jr Hb gdı{YHšna bnHš_V
_r{S`ı àn`dO {b. Hš mg ga{j V h.
bnHš_V _r{S`ı àn`dO {b. Hš {bE _ÐHš Ed àHbeHš बालाजी मुले Ûıar
bnHš_V _r{S`ı àn. {b., ßbıO Hš. 192, 207, 208 E _. AıB. Sr. gr.
BrS{ñO`b E[a`ı, ~Or~ıar, ZzJna _{ÐV Ed bnHš_V ^dZ n.
Odñabnb ZñEš _ıJ, ZzJna _ àHb{eV.
P.O.BOX NO. 230 R.N.I. No. 47101/89
XaÛdZ : 0712-2423527 (7 bnB'g) \ŠSg : 6618555
Email : gnXHš` : lsedit.ngp@lokmat.com
{dkmZ : advt.ngp@lokmat.com {dVaU : circ.ngp@lokmat.com

इतिहास पर नजर 26 अगस्त

आज ही के दिन 1994 में ब्रिटेन में पहली बार एक व्यक्ति के शरीर में बैटरी से चलने वाले दिल का सफल ऑपरेशन किया गया था. दक्षिणी इंग्लैंड के रहने वाले 62 वर्षीय इस व्यक्ति की हालत स्थिर बताई गई और उसका ऑपरेशन केम्ब्रिज स्थित दुनिया के जाने माने पैपवर्थ अस्पताल में हुआ था. इस व्यक्ति के निरंतर खराब होते स्वास्थ्य के चलते डॉक्टरों ने उसके जीवित रहने की अवधि चंद महीने ही बताई थी. बाद में इस व्यक्ति ने पहली बार होने वाले ऑपरेशन के लिए हामी भर दी और डॉक्टरों ने अमेरिका में निर्मित बैटरी से चलने वाले इस यंत्र का प्रयोग किया. लेकिन साथ ही इस बात को भी पहले से ही बता दिया गया था एलवीएडी के नाम से जाना जाने वाला ये यंत्र किसी प्रकार का मानव हृदय नहीं है. ये एक इलेक्ट्रिकल पंप था जो बैटरी से चलने के बाद मानव हृदय में रक्त संचार करने में मदद करता था. ■■

- 1303-अलाउद्दीन खिलजी ने राणा भीम सिंह को हराने के बाद चित्तौड़गढ़ पर कब्जा किया.
- 1541-तुर्की के सुल्तान सुलेमान ने बुडा और हंगरी पर कब्जा किया.
- 1910-मदर टेरेसा का जन्म हुआ.
- 1957-सोवियत संघ ने अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल के सफल परीक्षण की घोषणा की.
- 2002-दक्षिण अफ्रीका के जोहांसबर्ग में 'पृथ्वी शिखर सम्मेलन 2002' शुरू हुआ.

पाठकों के पत्र

अतीतजीवी मानसिकता

'महारानी' वसुंधरा राजे, 'नवाब' सैफ अली खान पटौदी, 'मांडा के राजा' पूर्व प्रधानमंत्री स्व. वी.पी. सिंह- ऐसी कई शख्सियतें हैं जिनके नाम के पहले पुराकाल के विशेषण लगाए जाते हैं. -'रियासतों का दौर खत्म हुआ.' 'लोकतंत्र' में इनका क्या औचित्य! संभवतः लोग अतीत से बाहर निकलना ही नहीं चाहते. राजतंत्र के अवशेषों को लोग उसी तरह अपनी छाती से चिपटाए हुए हैं जैसे बंदरिया अपने बच्चे को चिपटाए रहती है.

■ इंदिरा किरलय, नागपुर

बच्चों का शोषण

कई बार हम वो नहीं देख पाते जो हमारे आसपास उसी दायरे में हो रहा होता है. बालाश्रम का मामला भी कुछ ऐसा ही है. हमारे आसपास बच्चों के खिलाफ चल रही साजिश हमें सामान्य चश्मे से दिखाई भी नहीं देती. यह त्रासदी पर्यटन स्थलों पर और गंभीर रूप में सामने आती है. बच्चों से अब सिर्फ मेहनत का काम ही नहीं करवाया जाता, कई बार पर्यटन स्थलों पर हवस के लिए भी उन्हें परोसा जाने लगा है.

■ राकेश मालवीय, भोपाल

आप भी अपने पत्र हमें lsedit.ngp@lokmat.com पर मेल कर सकते हैं या डाक पते पर भेज सकते हैं.

बड़ी मुसीबत

दो भाई थे. एक की उम्र 8 साल दूसरे की 10 साल. दोनों बड़े ही शरारती थे. उनकी शैतानियों से पूरा मोहल्ला तंग आया हुआ था.

एक दिन गांव में एक साधु आया. बड़ी आशा से मां छोटे बच्चे को लेकर साधु के पास पहुंची. साधु ने बच्चे को अपने सामने बैठा लिया और मां से बाहर जाकर इंतजार करने को कहा .

हास्य

साधु ने बच्चे से पूछा- ''बेटे, तुम भगवान को जानते हो न? बताओ, भगवान कहां है?''

बच्चा कुछ नहीं बोला, बस मुंह बाए साधु की ओर देखता रहा. साधु ने फिर अपना प्रश्न दोहराया. पर बच्चा फिर भी कुछ नहीं बोला. अब साधु को कुछ चिढ़ सी आई. उसने थोड़ी नाराजगी प्रकट करते हुए कहा- ''मैं क्या पूछ रहा हूं तुम्हें सुनाई नहीं देता! जवाब दो, भगवान कहां है?''

अचानक जैसे बच्चे की चेतना लौटी. वह उठा और तेजी से बाहर की ओर भागा. साधु ने आवाज दी पर वह रुका नहीं, सीधा घर जाकर अपने कमरे में पलंग के नीचे छुप गया. बड़े भाई ने पूछा- ''क्या हुआ?''

''भैया, तुम भी जल्दी से छुप जाओ.'' बच्चे ने घबराए स्वर में कहा.

''पर हुआ क्या?'' बड़े भाई ने भी पलंग के नीचे घुसने की कोशिश करते हुए पूछा.

''अबकी बार हम बहुत बड़ी मुसीबत में फंस गए हैं. भगवान कहीं गुम हो गया है और लोग समझ रहे हैं कि इसमें हमारा हाथ है!''■■